i) दृष्टार्थ शब्द — वह है जिसका अर्थ अर्थात् विषय इस संसार में देखा जाता है अतः देखी हुई वस्तु या विषय के संबंध में जो देखा जाता है वह दृष्टार्थ शब्द है, जैसे ग्रह, तारे आदि के विषय में नक्षत्र विज्ञान जो बताता है वह दृष्टार्थ शब्द है।

ii) अदृष्टार्थ शब्द — वह है जिसके अर्थ का प्रत्यक्ष नहीं होता है। इसके शब्द जिन विषयों का इस संसार में नहीं देखा जाता है किन्तु भी उसके विषय में कहा जाता है तो उसे अदृष्टार्थ शब्द कहते हैं, जैसे- आत्मा, पुनर्जन्म, स्वर्ग- नर्क, ईश्वर आदि के संबन्धों में किए गए कथन अदृष्टार्थ शब्द हैं। वेदों में इसके विषय में बताया गया। अतएव वैदिक शब्द अदृष्टार्थ शब्द है जबकि लौकिक शब्द दृष्टार्थ शब्द है, इसलिए तर्कसंग्रह के लेखक अन्नभट्ट ने शब्द को दो प्रकार का माना है वैदिक और लौकिक।

सन्निकर्ष छः है —

i) संयोग, ii) संयुक्त समवाय
iii) संयुक्त समवेत समवाय
iv) समवाय, v) समवेत समवाय
vi) विशेषण विशेष्य भाव।

अनुमान के अंग — पक्ष, हेतु, साध्य, परामर्श, अनुमिति

अनुमान के दो आधार है
1) मनोवैज्ञानिक ii) तार्किक

मनोवैज्ञानिक आधार पक्षधर्मता और तार्किक आधार व्याप्ति है,

व्याप्ति का ज्ञान प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, भूयोदर्शन, उपाधिनिराकरण, सामान्य लक्षण, आदि द्वारा होता है।

हेतु और साध्य का अनिवार्य संबंध व्याप्ति है।

मीमांसा दर्शन उपमान के अतिरिक्त और सादृश्यता भी दो चालों को स्वीकारता है।

आप्त पुरुष का उद्देश्य शब्द कहलाता है।

हेत्वाभास · से आप क्या समझते हैं?

सत हेतु में पाँच गुण होते हैं- पक्षसत्व, सपक्षसत्व, विपक्षाऽसत्व, असत्प्रतिपक्षत्व और अबाधितत्व, इनमे से किसी भी गुण की त्रुटि होने पर वह हेतु- हेतु न रहकर हेत्वाभास बन जाता है। हेत्वाभास भी पंचविध है-

i) सव्यभिचार (अनैकान्तिक)
ii) विरुद्ध
iii) सत्प्रतिपक्ष
iv असिद्ध और
v) बाधित

i) सव्यभिचार — यह त्रिविध है

क) - साधारण - इसमे हेतु विपक्ष में भी विद्यमान रहता है, जैसे - पर्वत प्रमेय होने के कारण वह्निमान है, प्रमेयत्व (हेतु) वह्नि के अभाव वाले जलाशय (विपक्ष) में भी विद्यमान रहता है। यह हेतु की विपक्ष में अतिव्याप्ति है।

ख) असाधारण → यहाँ हेतु के सपक्षसत्व गुण का अभाव है। यहाँ हेतु केवल पक्ष में ही रहता है तथा सपक्ष एवं विपक्ष दोनों में ही